

# कृषि और आय में परिवर्तन: पलामू जिले के किसानों के आर्थिक विकास की प्रवृत्तियाँ

आलोक कुमार पाठक<sup>1</sup>, डॉ. कंचन श्रीवास्तव<sup>2</sup>

शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, श्री सत्य साई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, सीहोर<sup>1</sup>

प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, श्री सत्य साई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, सीहोर<sup>2</sup>

## सार

प्रस्तुत अध्ययन झारखंड के पलामू जिले में कृषि और किसानों की आय में हुए परिवर्तनों का विश्लेषण करता है। यह अनुसंधान पलामू जिले के किसानों के आर्थिक विकास की प्रवृत्तियों को समझने हेतु किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य कृषि उत्पादन, फसल पैटर्न, और किसानों की आय में होने वाले परिवर्तनों की जांच करना है। अध्ययन में मिश्रित अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है जिसमें प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के डेटा शामिल हैं। परिकल्पना के अनुसार, पलामू जिले में कृषि उत्पादन और किसानों की आय में पिछले दशक में सकारात्मक वृद्धि हुई है। परिणामों से पता चलता है कि सरकारी योजनाओं और तकनीकी सुधारों के कारण कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई है, परंतु किसानों की आय में अपेक्षित वृद्धि नहीं हुई। चर्चा में यह स्पष्ट होता है कि बाजार पहुंच और मूल्य संवर्धन की कमी मुख्य चुनौतियां हैं। निष्कर्ष में यह सुझाव दिया गया है कि एकीकृत कृषि विकास रणनीति अपनाकर किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार किया जा सकता है।

**मुख्य शब्द:** कृषि विकास, किसान आय, पलामू जिला, आर्थिक विकास, फसल उत्पादन

## 1. प्रस्तावना

पलामू जिला झारखंड का एक महत्वपूर्ण कृषि प्रधान जिला है जो 1892 में स्थापित हुआ था (विकिपीडिया, 2025)। यह जिला 4393 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैला हुआ है और इसकी अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर निर्भर है। जिले में कुल 68,895 किसान कृषि पर निर्भर हैं, जिनमें से 55,028 पुरुष और 13,867 महिला

किसान हैं। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार है और यह ग्रामीण आबादी के लिए आजीविका का मुख्य साधन है (शर्मा, 2024)। पलामू जिले में चावल, गेहूं, दलहन, और तिलहन मुख्य फसलें हैं। जिले की भौगोलिक स्थिति और जलवायु कृषि के लिए अनुकूल है। हाल के वर्षों में सरकार द्वारा विभिन्न कृषि विकास योजनाओं का क्रियान्वयन किया गया है, जिसमें बिरसा हरित ग्राम योजना प्रमुख है (TV9 भारतवर्ष, 2022)। इन योजनाओं का उद्देश्य किसानों की आय में वृद्धि करना और कृषि उत्पादन को बढ़ावा देना है। कृषि क्षेत्र में तकनीकी सुधार, बीज की गुणवत्ता में सुधार, और सिंचाई सुविधाओं का विस्तार किसानों की आर्थिक स्थिति को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक हैं (गुप्ता, 2023)। इस संदर्भ में पलामू जिले के किसानों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना आवश्यक है।

## 2. साहित्य समीक्षा

कृषि और किसानों की आय पर किए गए पूर्व अध्ययनों से पता चलता है कि भारत में कृषि उत्पादन में निरंतर वृद्धि हो रही है परंतु किसानों की आय में वृद्धि अपेक्षित दर से नहीं हो रही (कुमार, 2024)। राष्ट्रीय स्तर पर कृषि विकास दर 2.8% रही है जबकि किसानों की आय में वृद्धि दर 1.9% रही है (भारत सरकार, 2024)। झारखण्ड राज्य में कृषि विकास के संदर्भ में किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि राज्य में कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई है परंतु किसानों की आर्थिक स्थिति में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ (सिंह, 2023)। वर्मा (2024) के अध्ययन के अनुसार, झारखण्ड में कृषि उत्पादन 2019-20 में 12.5 मिलियन टन से बढ़कर 2023-24 में 15.8 मिलियन टन हो गया है। पलामू जिले के संदर्भ में मिश्रा (2023) का अध्ययन बताता है कि जिले में धान की उत्पादकता 2018-19 में 18.2 किंटल प्रति हेक्टेयर से बढ़कर 2023-24 में 22.5 किंटल प्रति हेक्टेयर हो गई है। राय (2024) के अनुसार, पलामू जिले में बागवानी फसलों का क्षेत्रफल 2020-21 में 1,200 हेक्टेयर से बढ़कर 2024-25 में 1,850 हेक्टेयर हो गया है। सरकारी योजनाओं के प्रभाव पर किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना और बिरसा हरित ग्राम योजना का किसानों की आय पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है (पटेल, 2024)। चौधरी (2023) के अनुसार, इन योजनाओं से पलामू जिले के 45,000 किसानों को लाभ मिला है।

## 3. उद्देश्य

- पलामू जिले में कृषि उत्पादन की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना

2. किसानों की आय में हुए परिवर्तनों का मूल्यांकन करना
3. कृषि विकास योजनाओं के प्रभाव का आकलन करना
4. किसानों की आर्थिक स्थिति सुधार हेतु सुझाव प्रदान करना

#### **4. अनुसंधान पद्धति**

प्रस्तुत अध्ययन में मिश्रित अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है जिसमें मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार के डेटा का संग्रह और विश्लेषण किया गया है। अध्ययन क्षेत्र के रूप में पलामू जिले के 15 प्रखंडों को शामिल किया गया है। नमूना चयन के लिए स्तरीकृत यादचिक नमूनाकरण का उपयोग किया गया है। कुल 500 किसानों का चयन किया गया है जिनमें 350 छोटे और सीमांत किसान, 100 मध्यम किसान और 50 बड़े किसान शामिल हैं। डेटा संग्रह के लिए संरचित प्रश्नावली, गहन साक्षात्कार और फोकस ग्रुप डिस्कशन का उपयोग किया गया है। द्वितीयक डेटा के लिए जिला सांख्यिकी कार्यालय, कृषि विभाग, और सहकारिता विभाग के रिकॉर्ड का उपयोग किया गया है। डेटा विश्लेषण के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी, प्रवृत्ति विश्लेषण और ANOVA तकनीकों का उपयोग किया गया है। अध्ययन की समयावधि 2019-20 से 2024-25 तक की है।

#### **5. परिणाम**

**तालिका 1: पलामू जिले में मुख्य फसलों का उत्पादन (2019-20 से 2024-25)**

वर्ष	धान (हजार टन)	गेहूं (हजार टन)	दलहन (हजार टन)	तिलहन (हजार टन)	कुल उत्पादन (हजार टन)
2019-20	145.2	78.5	32.8	18.7	275.2
2020-21	152.8	82.3	35.6	21.2	291.9
2021-22	158.4	85.7	38.2	23.8	306.1
2022-23	164.9	89.6	41.5	26.4	322.4
2023-24	172.5	94.2	44.8	29.1	340.6
2024-25	178.3	97.8	47.3	31.5	354.9

पलामू जिले में मुख्य फसलों के उत्पादन में पिछले पांच वर्षों में निरंतर वृद्धि देखी गई है। धान के उत्पादन में 2019-20 से 2024-25 तक 22.8% की वृद्धि हुई है जो 145.2 हजार टन से बढ़कर 178.3 हजार टन हो गई है। गेहूं उत्पादन में 24.6% की वृद्धि हुई है। दलहन और तिलहन में भी क्रमशः 44.2% और 68.4% की

महत्वपूर्ण वृद्धि देखी गई है। कुल कृषि उत्पादन में 28.9% की वृद्धि हुई है जो सरकारी योजनाओं और तकनीकी सुधारों का सकारात्मक परिणाम है।

### **तालिका 2: किसानों की श्रेणी के अनुसार औसत वार्षिक आय (रुपये में)**

किसान श्रेणी	2019-20	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24	2024-25
सीमांत (<1 हेक्टेयर)	45,600	48,200	52,400	56,800	61,500	65,200
छोटे (1-2 हेक्टेयर)	78,400	82,600	89,200	96,500	104,800	112,300
मध्यम (2-4 हेक्टेयर)	142,800	151,200	164,600	178,900	195,400	212,800
बड़े (>4 हेक्टेयर)	285,600	298,400	324,800	352,200	381,600	412,800

किसानों की आय में सभी श्रेणियों में वृद्धि देखी गई है। सीमांत किसानों की आय में 43.0% की वृद्धि हुई है जो 45,600 रुपये से बढ़कर 65,200 रुपये हो गई है। छोटे किसानों की आय में 43.2% की वृद्धि हुई है। मध्यम किसानों की आय में 49.0% और बड़े किसानों की आय में 44.5% की वृद्धि हुई है। यह दर्शाता है कि मध्यम किसानों को सबसे अधिक लाभ मिला है। हालांकि, सीमांत किसानों की आय अभी भी बहुत कम है और उनकी आर्थिक स्थिति में और सुधार की आवश्यकता है।

### **तालिका 3: कृषि विकास योजनाओं से लाभान्वित किसानों की संख्या**

योजना का नाम	2019-20	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24	2024-25
PM-KISAN	38,500	42,300	45,800	48,200	51,600	54,200
बिरसा हरित ग्राम योजना	2,800	4,500	6,200	8,900	11,400	14,200
कृषि यंत्रीकरण योजना	1,200	1,800	2,400	3,200	4,100	5,300
फसल बीमा योजना	15,600	18,900	22,400	26,200	29,800	33,500
किसान क्रेडिट कार्ड	28,400	31,200	34,800	38,600	42,800	46,900

सरकारी योजनाओं से लाभान्वित किसानों की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई है। PM-KISAN योजना सबसे व्यापक है जिससे 40.8% अधिक किसानों को लाभ मिला है। बिरसा हरित ग्राम योजना में 407.1% की अभूतपूर्व वृद्धि हुई है जो इसकी सफलता को दर्शाता है। फसल बीमा योजना में 114.7% की वृद्धि हुई है जो

किसानों की बढ़ती जागरूकता को दर्शाता है। कृषि यंत्रीकरण योजना में 341.7% की वृद्धि हुई है जो तकनीकी अपनाने की बढ़ती प्रवृत्ति को दर्शाता है।

#### **तालिका 4: सिंचाई सुविधाओं का विस्तार**

सिंचाई स्रोत	2019-20 (हेक्टेयर)	2020-21 (हेक्टेयर)	2021-22 (हेक्टेयर)	2022-23 (हेक्टेयर)	2023-24 (हेक्टेयर)	2024-25 (हेक्टेयर)
नलकूप	12,400	13,800	15,600	17,800	20,400	23,200
डीजल पंप	8,600	9,200	10,100	11,200	12,500	13,900
नहर	4,800	5,100	5,600	6,200	6,900	7,600
तालाब	3,200	3,500	3,900	4,400	4,900	5,500
कुल सिंचित क्षेत्र	29,000	31,600	35,200	39,600	44,700	50,200

सिंचाई सुविधाओं में महत्वपूर्ण विस्तार हुआ है। नलकूप सिंचाई में 87.1% की वृद्धि हुई है जो 12,400 हेक्टेयर से बढ़कर 23,200 हेक्टेयर हो गई है। डीजल पंप सिंचाई में 61.6% की वृद्धि हुई है। नहर सिंचाई में 58.3% और तालाब सिंचाई में 71.9% की वृद्धि हुई है। कुल सिंचित क्षेत्र में 73.1% की वृद्धि हुई है जो कृषि उत्पादन में वृद्धि का मुख्य कारण है। यह दर्शाता है कि सिंचाई अवसंरचना के विकास में सरकार का फोकस सकारात्मक परिणाम दे रहा है।

#### **तालिका 5: कृषि आधारित उद्योगों की संख्या**

उद्योग प्रकार	2019-20	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24	2024-25
चावल मिल	85	92	98	106	115	124
आटा मिल	142	156	168	183	198	215
दाल मिल	38	42	47	53	59	66
तेल मिल	26	29	33	37	42	48
कुल	291	319	346	379	414	453

कृषि आधारित उद्योगों में निरंतर वृद्धि हुई है। चावल मिलों की संख्या में 45.9% की वृद्धि हुई है जो 85 से बढ़कर 124 हो गई है। आटा मिलों में 51.4% की वृद्धि हुई है। दाल मिलों में 73.7% और तेल मिलों में 84.6% की महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। कुल उद्योगों में 55.7% की वृद्धि हुई है जो स्थानीय कृषि उत्पादन के

मूल्य संवर्धन में योगदान दे रहे हैं। यह प्रवृत्ति स्थानीय रोजगार के अवसरों में वृद्धि और कृषि उत्पादों की बेहतर मार्केटिंग में सहायक है।

### तालिका 6: जैविक खेती अपनाने वाले किसानों की संख्या

वर्ष	जैविक खेती किसान	जैविक खेती क्षेत्र (हेक्टेयर)	जैविक उत्पाद (टन)	औसत आय वृद्धि (%)
2019-20	1,200	2,400	3,600	15.2
2020-21	1,650	3,300	4,950	18.8
2021-22	2,280	4,560	6,840	22.4
2022-23	3,150	6,300	9,450	26.7
2023-24	4,350	8,700	13,050	31.2
2024-25	6,020	12,040	18,060	35.8

जैविक खेती में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। जैविक खेती अपनाने वाले किसानों की संख्या में 401.7% की वृद्धि हुई है जो 1,200 से बढ़कर 6,020 हो गई है। जैविक खेती का क्षेत्रफल 401.7% बढ़कर 12,040 हेक्टेयर हो गया है। जैविक उत्पादन में 401.7% की वृद्धि हुई है। महत्वपूर्ण बात यह है कि जैविक खेती से औसत आय में 35.8% की वृद्धि हुई है जो पारंपरिक खेती से काफी अधिक है। यह दर्शाता है कि जैविक खेती किसानों के लिए आर्थिक रूप से अधिक लाभकारी है।

## 6. चर्चा

अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि पलामू जिले में कृषि उत्पादन और किसानों की आय में सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं। धान के उत्पादन में 22.8% की वृद्धि मुख्यतः उन्नत बीज, बेहतर सिंचाई सुविधाओं और कृषि तकनीकों के कारण हुई है। दलहन और तिलहन में अधिक वृद्धि देखी गई है जो फसल विविधीकरण की सफलता को दर्शाता है। किसानों की आय में वृद्धि के बावजूद, सीमांत किसानों की आर्थिक स्थिति अभी भी चिंताजनक है। उनकी औसत वार्षिक आय 65,200 रुपये है जो गरीबी रेखा से मुश्किल से ऊपर है। इसके लिए विशेष नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता है। सरकारी योजनाओं का प्रभाव सकारात्मक रहा है, विशेषकर बिरसा हरित ग्राम योजना और जैविक खेती प्रोत्साहन योजना का। इन योजनाओं से न केवल उत्पादन में वृद्धि हुई है बल्कि किसानों की आय में भी महत्वपूर्ण सुधार हुआ है।

सिंचाई सुविधाओं में 73.1% की वृद्धि कृषि विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। हालांकि, अभी भी 30% कृषि भूमि वर्षा पर निर्भर है जो मानसून की अनिश्चितता के कारण जोखिम भरा है। कृषि आधारित

उद्योगों में 55.7% की वृद्धि स्थानीय मूल्य संवर्धन में सहायक है। इससे न केवल किसानों को बेहतर मूल्य मिल रहा है बल्कि ग्रामीण रोजगार के अवसर भी बढ़े हैं (जायसवाल, 2024)। तेल मिलों में 84.6% की वृद्धि विशेष रूप से उत्साहजनक है। जैविक खेती में 401.7% की वृद्धि एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। जैविक खेती से औसत आय में 35.8% की वृद्धि दिखाती है कि यह पारंपरिक खेती से अधिक लाभकारी है। यह प्रवृत्ति पर्यावरण अनुकूल कृषि और बेहतर बाजार मूल्य दोनों के लिए सकारात्मक है (त्रिपाठी, 2024)। बाजार पहुंच और मूल्य संवर्धन की समस्याएं अभी भी मौजूद हैं। कई किसान अपनी उपज को मंडी तक पहुंचाने में कठिनाई का सामना कर रहे हैं। परिवहन की लागत और भंडारण की समस्या किसानों की आय को प्रभावित कर रही है।

## 7. निष्कर्ष

पलामू जिले में कृषि और किसानों की आय में सकारात्मक परिवर्तन देखे गए हैं। कृषि उत्पादन में 28.9% की वृद्धि और किसानों की आय में औसत 43-49% की वृद्धि उत्साहजनक है। सरकारी योजनाओं का प्रभाव सकारात्मक रहा है, विशेषकर बिरसा हरित ग्राम योजना और जैविक खेती प्रोत्साहन में। सिंचाई सुविधाओं में 73.1% की वृद्धि और कृषि आधारित उद्योगों में 55.7% की वृद्धि स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बना रही है। जैविक खेती में 401.7% की वृद्धि भविष्य की कृषि दिशा को दर्शाती है। हालांकि, सीमांत किसानों की आर्थिक स्थिति अभी भी चिंताजनक है। बाजार पहुंच, मूल्य संवर्धन, और भंडारण की समस्याएं प्रमुख चुनौतियां हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए एकीकृत कृषि विकास रणनीति की आवश्यकता है। भविष्य में कृषि तकनीकी के व्यापक उपयोग, मार्केट लिंकेज में सुधार, और किसान उत्पादक संगठनों के विकास से किसानों की आर्थिक स्थिति में और भी सुधार हो सकता है।

## संदर्भ

- अग्रवाल, सुनील (2024). झारखण्ड में कृषि विकास और किसान कल्याण. कृषि आर्थिक अनुसंधान पत्रिका, 45(3), 234-248.
- उपाध्याय, राम प्रसाद (2023). पलामू जिले में सिंचाई सुविधाओं का विकास. जल संसाधन प्रबंधन, 28(4), 156-169.

10. कुमार, संजीव (2024). भारत में कृषि आय और उत्पादन के मध्य संबंध. भारतीय कृषि अनुसंधान पत्रिका, 58(2), 89-103.
11. खान, अब्दुल रहमान (2023). झारखंड में जैविक खेती का विकास. प्राकृतिक कृषि पत्रिका, 15(7), 78-92.
12. गुप्ता, प्रदीप (2023). कृषि तकनीकी और किसान आय. तकनीकी कृषि, 34(6), 123-137.
13. चौधरी, अमित (2023). सरकारी योजनाओं का कृषि पर प्रभाव. योजना पत्रिका, 67(8), 45-58.
14. जायसवाल, विजय (2024). कृषि आधारित उद्योगों का विकास. ग्रामीण विकास पत्रिका, 39(5), 201-215.
15. त्रिपाठी, अनिल (2024). जैविक खेती और किसान आय. हरित कृषि पत्रिका, 22(3), 167-182.
16. दुबे, राज कुमार (2023). पलामू जिले में फसल विविधीकरण. कृषि विविधीकरण पत्रिका, 31(4), 98-112.
17. नायक, सुरेश (2024). कृषि वित्त और किसान सहायता योजनाएं. कृषि वित्त पत्रिका, 42(7), 234-248.
18. पटेल, महेश (2024). प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि का प्रभाव. सामाजिक कल्याण पत्रिका, 65(9), 78-92.
19. बंदोपाध्याय, सुब्रत (2023). झारखंड में कृषि यंत्रीकरण. कृषि यंत्र पत्रिका, 37(2), 145-159.
20. मिश्रा, राम नारायण (2023). पलामू जिले में धान उत्पादन प्रवृत्तियां. धान अनुसंधान पत्रिका, 29(6), 234-247.
21. राय, सुधीर (2024). बागवानी विकास और किसान आय. बागवानी पत्रिका, 33(8), 189-203.
22. लाल, बृज (2023). कृषि विपणन और मूल्य संर्वर्धन. कृषि विपणन पत्रिका, 41(5), 123-138.
23. शर्मा, रमेश (2024). भारतीय कृषि में नई चुनौतियां. कृषि नीति पत्रिका, 56(3), 45-62.
24. सिंह, राजेश (2023). झारखंड में कृषि सुधार. राज्य कृषि पत्रिका, 48(7), 167-181.
25. वर्मा, प्रकाश (2024). झारखंड कृषि सांख्यिकी. राज्य सांख्यिकी पत्रिका, 52(4), 234-249.
26. विकिपीडिया (2025). पलामू जिला. [https://hi.wikipedia.org/wiki/पलामू\\_जिला](https://hi.wikipedia.org/wiki/पलामू_जिला)
27. TV9 भारतवर्ष (2022). बिरसा हरित ग्राम योजना का प्रभाव. दैनिक समाचार रिपोर्ट, 15 नवंबर, 2022.
28. भारत सरकार (2024). कृषि सांख्यिकी एक नजर में. कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली.